१७/७ 6393.
Price -11/-.

अनेकार्थ

अर्थात्

श्री पण्डित नन्द दास महाराज रचित

जिसमें

एक २ वस्तु के अनेक अर्थ महा ललित दोहों के अन्त में श्री मन्महा विष्णु के गुण कथन पूर्व्वक रचित हैं

स्थान लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापे खानेमें छपा

अगस्त सन् १८८० ई०

RANBIR LIBRARY
No.
JAMMOO
SRINAGAR PRATAP SINGH

॥श्रीगणेशायनमः अथानेकार्थ लिख्यते दोहा जोमधु मङ्गल जल्ल
मय वारण करण अमेव विघ्न हरण सब सुख करणनमो नमो तहि देव १ एक
के वस्तु अनेक है जग मगात जग धाम जिमि कञ्चनते किङ्किनी कङ्कन कुण्ड
ल नाम २ उचरि सकत नहिं संस्कृत औ समुझत असमर्थ तिन हित नन्द सुमति
यथा भाखि अनेका अर्थ २ गोनाम-गो इन्द्री कहि बाक जल स्वर्ग वज्र खग
छन्द गोधर गोतरु गोकिरिणी गोपोलक गोबिन्द ४ सुरभी-सुरभी चन्दन सुरभिम
ग सुरभी बहुरि वसन्त सुरभि चरावत वन सुने जो जग कारण कन्त ५ मधु-मधुव
न्त मधुचैत्र नभ मधुमदिरा मकरन्द मधुजल मधुपय मधुसुधा मधुसूदन गोविन्द
६ कलि कलि कलेश कलि सूर मन कलि निषङ्ग सङ्गम कलि कलि युग नहँ औ
नहिं केवल केशव नाम ७ आत्मा मनबुधि चित्त सुभाव तन धर्म जीव अहं
कार एसब कहिये आतमा पर मात्मा आधार ८ धनञ्जय अग्नि धनञ्जय का

हत कवि पवन धनञ्जय आहि अर्जुन बहुरि धनञ्जयो कृष्ण सारथी जाहि ६ ॥
अर्जुन अर्जुन द्रुम अर्जुन धवल सहसा अर्जुन अर्थ अर्जुन मध्यम पाण्डु
सुत हति खेले जिनसर्थ १० पत्र पत्र पर्णओ पत्ररथ वाहन पत्र सुचित्त पङ्ख पत्र
विधि नाहिं दियो उडि मिलते मित्र ११ पत्री पत्री तरु पत्री कमल पत्री बहुरि वि
हङ्ग पत्री शर कर चित्र जिमि इमि सेवहु वीरङ्ग १२ बरही बरही द्रुम बरही अगिनि
बरही कुक्कुट नाम बरही मोर किशोर के चन्द धरे शर श्याम १३ धाम धाम तेज अ
रु धाम तन धाम किरिनि गृह धाम धामज्योति जो ब्रह्म सों धरी भूत हरि श्याम १४ ॥३
काम काम भोग अभिलाष पुनि मन्मथ कहिए काम काम काज तजि भूलिम
न भजिले मन अभिराम १५ बाम बाम कुटिल औ बाम शिव बाम काम कर बा
म । बाम मनोहर को कहत जैसे सुन्दर श्याम १६ भव भव शङ्कर संसार भवभव
कहिए कल्यान । भवजो जन्म भवजन फल भवभजिए भगवान १७ कंकसुख ।

कज्जल कं अनल कं शिर कंपुनि आम कं कञ्चन सौं प्रीति जस अस कहिए हरिना-
म १९ खं खंनभ खं गह खं नखत खंस्थनि को नाम। खंडचौ दुख देत है दया कर
गे हरि श्याम १८ कल्प कल दिवस बिधि कल्प सम कल्प समय जो होइ। कल्प
कपट तजि हरि भजौ कल्पवृक्ष सम सोइ २० कार कागज पुष्कर हस्त कर करि
रिणी कर दान। कर बिषया सम तजि बिषय भजि जैन दया निधान ॥२१॥ दर दरजो
कहत कवि शंख को दरहरषा को नाम। दरउरे रावन कुवर गिरि धर सुन्दर श्याम
॥२२॥ वर वर सुन्दर वर श्रेष्ठ पुनि वर पौन देवता देत। वर दुल्लह ने कान्ह नित ह-
जति य हिय हरि लेत ॥२३॥ वृक वृषसुर पति वृष कर्ण पुनि वृषे वृषभ वृष काम। वृष
सुधर्म्म कारि हरि भजौ जो चाहौ सुख धाम ॥२४॥ पतङ्ग तरणि पतङ्ग पतङ्ग खग।
पावक बहुरि पतङ्ग सब जग रङ्ग पतङ्ग को हरि एकै नर रङ्ग २५ दल दल कहिए
नृप को कर कदल पचिरा के नाम। दल बरही के चन्द्र शिर धरे श्याम अभिराम २६

पल·पल अमिष को कहत कवि घट उसास पल सोइ। पल जो पलक पलहीन ति- ७
य जोबिन जगत न होइ २७ बल·बल बीरज धीरज बहुरि बलरूप दल को नाम। ब-
ल सहसा बल दैत्य पुनि बल कहिए बलिराम २८ अल·अल समर्थ अल बरण
पुनि अल पूरण के नाम। अल अभरण अल अलस तजि भजु मन मोहन श्याम
२९ बय·वय बिहङ्ग को कहत कवि बय कहिये पुनि काल। बय जो बहिक्रम जा-
तहै भजिले मदन गोपाल ३० जीव·जीव बृहस्पति को कहत जीव कहीं बृन्द ॥
जीव आतमा जानिये जीव को जीव गोबिन्द ३१ मार·मार मृतक बिष मार पुनि मार·
कहावै काम। मार अमृत कोबिद कहत सुन्दर गिरिधर नाम ३२ सार·सार बीर्य।
धीरज धरम सार बज्र घृत सार। सार सबनि को साँवरो ज्यौं महिप संसार ॥ ३३ ॥
कलभ·कलभ कहत करि सावक को कलभ बहुरि उत्तालु। कलभ कलुष काल·
कालते राखहु कृष्ण कृपालु ३४ नभ·नभ अषान नभ भाद्र पद नभ सावन को

मास। नभ अकास खम निकर ही घट घरम निवास ३५ वसु वसुधा वनिता पुनि
शशिनि वसु किरणी वसु नीर। वसु धन जगमें सो धनी धन जाके बल बीर ३६।
षट षटुती ऋण को कहत कवि षट आरज्य कहन्त। षट प्रवीन सो जगत मेंराम
सो कहण कन्त ३७ तुरङ्ग तुरङ्ग तरङ्ग तुरङ्ग तुरङ्ग मन वहरि तुरङ्ग तुरङ्ग।
हरिन तुरङ्ग तुरङ्ग साह रंगन हरिस तुरङ्ग ३८ आत्मज आत्मज काहिए रुधिर
सो आत्मज कहिए काम। आत्मज पुत्र सपुत्र सो जय जय सुन्दर श्याम ३९ को
वसु शिर कहत कवन्ध है है कवंध पुनि नीर। राक्षस एक कवन्ध हय जे
हि गति हिय रघुवीर ४० हंस हंस तुरङ्ग मंस रवि हंस मराल मुकुन्द। हंस जीव
को कहत कवि परम हंस गोविन्द ४१ पयोधर भूधरच मेघ शक्र कुच पेन द्रुम
सब्द पयोधर आहि। धर गिरि भूधर नृपति रक्ष आदि सब्द ४२ दान दा
न कहावे वलितनय विशिष आहि पुनि दान। दान कहत कवि स्वर्ग को।

(दोहावली)

श्रीपति हरि निर्बान ५३ वरुण-वरुण कहत कवि नीर को वरुण यार को नाम
वरुणहरे जब नन्द को कैसे ध्यावे श्याम ५४ गोत्र-गोत्र नाम को कहत कवि गोत्र
शैल मुनि अन्न। गोत्र वंश सो धन्य जहं गोविन्द गुणगनि यन्न ५५ तनु-तनु शरीर
विस्तार तनु तनु सूक्ष्म तनु तात। तनु बिरले के जगत में जानै रस की बात ५६ बा-
ल-बाल सरे रु बाल शिशु मूक कहावै बाल। बाल अन्न सोहे जगत भजै सो बाल
गोपाल ५७ जाल-जाल करोषा जाल गण जाल दम्भ असमन्द। जाल इन्द्र वि-
द्या जगत देखि भूलि जैहि नन्द ५८ काल-काल ग्रसित पुनि काल बध धर्म्मराज
पुनि काल। काल व्याल के काल हरि मोहन मदन गोपाल ५९ व्याल-व्याल क्रू
र व्याल गज बासर कहिये व्याल। व्याल सर्प शिर चढ़ि नच्यो नटवर मदन गोपाल
५० ताल-ताल ताल हरि ताल पुनि हि भय काल अरु जाल। ताल वृक्ष फल खा-
इ खर हन्तो सो नन्द के लाल ५१ जल-जल जल जमीन मोती जलज जलज संख

अरु चन्द्र। जलज कमल पुनि कर धरे ब्रज आवत नंद नन्द ५२ तम-ताम नाम स
गुन राहु तमतजो तिमिरतम क्रोध। तम आसन को कत हरि उर धरि दीप प्रमोद
५३ गुण-गुण राजस गुण सूत्र पुनि गुण कुबरए की जेह। गुण चरित्र गोविन्द के
गावहु हियभरि नेह ५४ अवि-अविपर्व्वत अविमेघ पुनि अवि सविता को ना-
म। अवि रसक सम जगत में एकय सुन्दर राम ५५ बन-बन पानी को कहत
कवि बन वारिद के जान। बन कानन ते सुरभि संगते आवत नंदलाल ५६ घन-
घन हठ घन विस्तार पुनि घन ज्यहि गढ़त लुहार। घन अबुन्द घन पुनिसघन
सुन्दर नन्द कुमार ५७ वरण-वरण अरुण सित पीत है वरण द्विजा धिकचारि
वरणाक्षर वरणा स्तुती अवनर एक मुरारि ५८ वारण-वारण कहिये बर जिबोवार-
ण पुनि सन्नाह। वारण पुनि गज उहरो आनि गह्यो जब ग्राह ५९ पोत-पोत क
हावे निपट शिशु पोतजो पञ्च अनूप। पोत नाव्रजगजलनिधी कृष्ण नाम सुख।

रूप ६० बुध·बुध पण्डित को कहत कवि बुध शशि पुत्र बखान। बुध हरि को अव-
तार है बोध भयो ज्यहि ज्ञान ६१ अनन्त·गगन अनन्त कहन्त कवि बहुरि अन- १
न्त अनेक। शेश अनन्त कहन्त बुध हरि अनन्त पुनि एक ६२ छय·छय निवास
को कहत कवि छय कहिये छयरोग। छय परलै हरि मध्यमें लीन होत सब लोग
६३ राजिव·राजिव शशि राजिव सलिल राजिव मुक्ता मीन। राजिव नाभि गो-
विन्द कीजहि विधि अलि है लीन ६४ लोक·लोक व्याकरण लोक जन लोक देह
रस मूला तीन लोक सुत उदर में देखिय शामति भूलि ६५ शुक्र·शुक्र वीर्य अरु
अग्नि कहि शुक्र ज्येष्ठ को मास। शुक्र अजहुँ बाल नाहि प्रति छल करि भरत।
उसास ६६ खग·खग रवि खग शशि खग पवन खग अम्बुद खग देव खग बिह-
ङ्ग·हरि सुतरु भजु जड़ तजु से मर शेव ६७ कलाप·गुण कलाप तूनीर पुनि अ-
भरण आहि कलाप। बरही चन्द कलाप पुनि हरि भजु ताहि कलाप ॥६८॥

कृष्णा कृष्णा कृष्णा कुलकृष्णा निधिकृष्णा वेद अरु जीव। कृष्णा नन्द के सदन
में ताहि नभावै नीव ईर्ष उडुप उडुप विहङ्गम नरवत अरु उडुप स्यादनो आ-
हिउडुप चन्द नौका उडुप उडुप गरुड़ वरवाहि ७० मन्द मन्द समीर उमन्द खलम-
न्द बाल अधमन्द। मन्द मूढ़ नर शनि अवर जेन भजहि नंद नन्द ७१ स्यन्दन स्य-
न्दन जल को कहत कवि स्यन्दन चित्त तरङ्ग। स्यन्दन रथ जेहि रुकुमिनी ले आये
श्रीरङ्ग ७२ मन्थी मन्थी शशि मन्थी मदन मन्थी आहि मचराङ। मन्थी बहुरो राहु
है ज्यहि हरि किय बिबि खण्ड ७३ मन्थी इति अथ कौशिक कौशिक गुग्गुल
इन्द्र पुनि कौशिक तल्लुक नाम। कौशिक विश्वा मित्र पुनि जिन पायो श्रीराम।
७४ पुष्कर पुष्कर जल पुष्कर गगन पुष्कर सुण्ड गयन्द पुष्कर तीरथ पापहर पुष्कर
नयन गोविन्द ७५ अम्बर अम्बर अम्मृत को कहत अम्बर गगन सुभाइ ॥
अम्बर पीत सुश्यामतनु तड़ित रही लोभाइ ७६ सम्बर सम्बर जल सम्बर असुर। (सम्बर)

सम्बर जलज अनूप। सम्बर बाधित गाढ़ि गहि हरण को नाम अनूप ७७ कम्बल अ
कम्बल गौगल तनु कहत कम्बल जलपरि वाह। कम्बल धेनु चरावते ओढ़ि जगत
के नाह ७८ नग-नग कहिये द्रुम नगन तसु नग कहिये पुनि धाम। नग गिरिजा-
तो कान्ह को नागर नगधर नाम ७९ नाग-नागपुत्र औनाग गज नागदुष्ट नर वाम
नागसर्प संसार कहि सिद्धि मन्त्र हरिनाम ८० कर्ण-कर्ण कहावे रवितनय कर्ण क-
हत पुनि कान। कर्ण योग राजा करण कर्ण धार भगवान ८१ द्विज-द्विज पक्षी को
कहत कवि द्विज कहिये पुनि दन्त। तीनि वर्ण द्विज नव भले ज्ञानज्ञान त भगवन्त ८२
अज-अज बकरा अज पितामह अज कहिये पुनि ईश। अज योवन अमरण कह-
त अज एकै जगदीश ८३ शिव-शिव सुख शिव कल्यान पुनि श्रेष्ठपुरुष शिव हो-
इ। शिव शङ्कर शिव सलिल सों हरण सदा शिव सोइ ८४ विरोचन-वन्हि विरोचन
सूर्य पुनि चन्द्र विरोचन गात। दैत्य विरोचन धन्य सो जाके सो बलि तात ८५॥अ

बलि· बलि नही बलि बल्ली बलि भोजन बलि भाग । बलि राजा कौ जॉर बलि जा-
हि हिये अनुराग ८६ वृक· वृक पावक को कहत कवि वृक भेड़हा को नाम । वृक दा-
नव दलि देव सब गावे सुन्दर श्याम ८७ रज रज राजस आरक्त रज रज युवती में हो-
इ । रज धूरि रज पाप को हरि निर्मल जल धोइ ८८ कुश· कुश सीता के गर्भ पुनि कु-
श कहिये पुनि नीर । कुश दान व दलि द्वारिका तहां बसे यदु वीर ८९ कम्बु· कम्बु संख
औ कम्बु गज कम्बु इष्ट को नाम । भुवन गगन अरु भुवन जल त्रिभुवन नायक श्याम
९० कूट· कूट बहुत अरु कूट गिरि अहि रन कूट कहत्त कूट कपट को निपटि तजि भ-
जिये मन भगवन्त ९१ कुज कुज मङ्गल कुज अन्न द्रुम कुज भूमी सुर नाम । यमयु-
ग यम यमराज ते राखहु सुन्दर श्याम ९२ खर· खर राक्षस खर सान खर खर तिक्ष-
न को नाम । खर गर्दभ समने जगतये न भजहिं श्रीराम ९३ हरिणी· हरिणी यतिमा
हेमकी हरिणी मृग की तीय । हरिणी जुहिजा मास को फूल माल हरि हीय ९४ धात्री·

6393.

धात्री कहिये आमला धात्री गाइ बखानि। धात्री धरणी शीश पर मोहन तिलक पर
मानि। ९५ शिवा शिवा रामु की सुंदरी शिवा स्यार को नाम। शिवा हरन्निमिष
ग कोइ मि अधहर हरि नाम ९६ रशना रशना काव्यो को कहत रशना बहुरंग
म। रशना सिंहा सों कहें क्यों न भजत हरि नाम ९७ रम्भा रम्भा कहिए अप्सरा र
मा कदली नाथ रम्भा गोकुल गाइ धुनि जिमि मोहे धन श्याम ९८ माया मा
या छल माया दया माया नेह कहने ॥४॥ माया मोहन लाल जेहि मोहे स
ब जगजन ९९ इला इला मही कहि बुद्धि तिय इला रमा अभिराम। इलासर स्व
तीभली जामे हरि को नाम १०० ज्योति ज्योति नखत नग ज्योति द्रुम ज्योति नेत्र
अरु आगि। ज्योति ब्रह्म सों नन्द गृह रहो भली दै लागि १०१ सुमना सुमना को
हिए भावती सुमना सुंदिता लीय। सुमना सोमति काहू सो करिले हठ सोजीय
१०२ इड़ा इड़ा कमल नभ देवता इड़ा भूमि अभिराम। इड़ा अम्बिका मातु।

मोहिं दीजय हरि रत नाम १०३ भूषण-भषण अभरण को कहत भूषण सूर्य हि चन्द। कुल भूषण नर हरि भजे बज भूषण नँद नन्द १०४ चित्र-चित्रमहा आचार्य्य पुनि कागट लिखे सोचित्र। चन्दन चित्र विचित्र बज बिहरत कान्ह मित्र १०५ निशा-निशा यामिनी को कहत निशा हरि द्रा नाम। निशा जाग माया निशा ज्याहि मोहे निशि वाम १०६ विधि-विधि वेधा विधि देव पुनि विधि काया विधि धाम। विधि की विधि हरि जोरची सोई विधि परि नाम १०७ जिह्म-जिह्म अलस को कहत कवि जिह्म कहावे मूढ। जिह्म कपट तजि हरि भजय घर घट प्रगट न गूढ १०८ हस्त-हस्त कहत गज सुण्ड सौं हस्त नक्षत्र सभाइ। हस्त। हाथते उतरि जामि नरही रात नपाइ १०९ कृतान्त-आगम शास्त्र कृतान्त पुनि सुनि कृतान्त सिद्धान्त। जम कृतान्त के त्रास ते रखहु कमला कान्त ११० मित्र-मित्र भानु को कहत कवि मित्र अग्नि को नाम। मित्र मीत सबजगत मे एकै सुन्दर

(अ०)

श्याम १११ रवि· रवि शशि ऐय अन गगन पुनि गिरि केकन्त कुरङ्ग। चातक दादुरी पद्युति नारि धनुष सारङ्ग ११२ हरि· इन्द्र चंद्र अरविन्द अलि कहिये हरि की यान। कञ्चन कामकुरङ्ग पुनि धनुष अखंड नभ भान ११३ पानी· पानी पावक पवन पै गिरि राजना गनरेन्द्र। जेहरि इन के मुकुट मणि हरि ईश्वर गोविन्द ११४ ध्रुव· ध्रुव निश्चै ध्रुव योग पुनि ध्रुव जो दण्ड ध्रुव नाल। ध्रुव तारे जिमि आजुलय गुन हैं औ गुण गोपाल ११५ सुमन· सुमनस सुर सुमनस पुहुप सुमनस बहुरि बसन्त। सुमनस सो जेहि मन बसै कोमल कमला कन्त ११६ बिटप· बिटप स्कन्ध पल्लव बिटप बिटप कहत विस्तार शाखि टप वृक्ष कीडार गहि ठाढ़े नन्द कुमार ११७ दान· दान द्विजन को दीजिये गज मद क हिये दान। दान सों वैर न तन वन गोपी प्रेम निधान ११८ रस· नव रस घृत अमृत रस रस विष रस अरु नीर। सब रस को रस प्रेम रस जाके रस बल वीर ११९ णेाह· नेह अणेाह अणेाह घृत बहुरो प्रेम अणेाह। निज चरणन गिरिधर धरनि नन्द दास कैं देह १२० कान्तार· कान्तार

कानन कहत कारण पुनि कान्तार। कान्तार दुर्भिक्ष पुनि भुनि पुनि येकान्तार १२१
पुण्डरीक-पुण्डरीक शरद कहत पुण्डरीक आकाश। पुण्डरीक हरि कमल जेहि क
मला को नित वास १२२ गौरी-गौरी आप सुता च्या गौरी हर्ई होइ। गौरी गिरिजा सु-
न्दरी शिव अर्द्धकी सोइ १२३ श्यामा-श्यामा तिय षोडश जुरज श्यामा रजनी हो-
इ। श्यामा कहिए गीति पुनि श्यामा पक्षी सोइ १२४ सुधा-सुधा सुधा सोमा सुधा सु-
धा सुधर वर नारि। बहुरि सुधा हरितकि उदर हरै रोग की खारि १२५ हरिद्रा-राज
गति कहिये हरिद्रा निशा हरिद्रा होइ। मङ्गल बहुरि गौरि हरि रुद हरिद्रा सोइ १२६।
वारुणी-गजगति कहिये वारुणी सुरा वारुणी सोइ। श्रीमद सी पुनि वारुणी हि
ग्रा पश्चिमा होइ १२७ मुकुट-पीनो पाहन पवनवन पयमीहि नाम नेरुद्ध रसभक
हिये मुकुट शिर हरि ईश्वर गोविन्द १२८ सीता-सीता निशि सीता क्षमा सीता भू
मि होइ। सीता चरीषको दीपक को गो सीता पुनि सोइ १२९ छुद्रा-वेश्या नीच

हरी मधु माधी अरु लाष। इनसो छुद्रा कहतहैं छुद्रा कहिए दारव १३० बला बला सन्ध धरणी बला बला औषधी होइ। बला चञ्चला लक्ष्मी जेहि पावहि सब कोइ १३१ चक्र चरण चक्रण चक्र गण चक्र बिहङ्गम शेष। परिघ पर्न जल थल नदी परिघ सूर शशि लेष। १३२ खर्ज्जूर जम्भा तार खर्ज्जूर हैं बहुरि खजत खर्ज्जूर। छुद्र तीनि खर्ज्जूर हैं पुनि क्षण विष खर्ज्जूर १३३। नेत्र नेत्र नयन अरु नेत्र पटु मृग मद नेत्र कहन्त। नेत्र ज्ञान जब जग मगे तब सूझै सो अनन्त १३४॥ हार हार मुक्त को कुसुम को छेत्र हार विस्तार। हार वीरको वली को को खोजत कवि हार १३५ अहि अहि बासर अहि राहु पुनि अहिय क दानव नाम। अहि भुजङ्ग काली दमन वनमाली घन श्याम॥ १३६ कुथ कुथ कन्था कुथ कीर पुनि कुथ कहिए कुथ सोद। मातङ्गाथी विमको कर कञ्चल कुथ सोद १३७। कुन्तल सूत्र धार कुन्तल कहें कुन्तल

कपट भेष। रक्त पानि कुन्तल कहत चहुरो कुन्तल केश १३८ कुन्त कुन्त सलिल अरु शक्ति है कुन्त अनल अरु काल। कुन्त जो कम्पन कहत पुनि कुन्त सुख कुन्त कराल १३९ तन्त तन्त सहस्र औतन्त पुनि सिद्धि औषधी नन्त। तन्त कहत सन्तन कहं एसब तन्त कहन्त १४० इति श्री नन्द दास कृतो नेकार्थ समाप्तः॥ शुभंभूयात्॥